Report on

National Seminar on Education, Economy and Environment: Intersection for a Better Tomorrow 22 December 2025
Organised by Government Degree College Chail–Koti in collaboration with Government Degree College Theog

A National Seminar on "Education, Economy and Environment: Intersection for a Better Tomorrow" was successfully organised on 22 December 2025 by Government Degree College Chail–Koti in collaboration with Government Degree College Theog. The event brought together academicians, researchers, scholars, and students from diverse institutions to deliberate on the dynamic interrelationships among education, economic development, and environmental sustainability in the contemporary global context.

The programme commenced with the ceremonial lighting of the lamp, symbolizing the triumph of knowledge over ignorance, followed by the formal welcome of distinguished guests and delegates.

Inaugural Session

In her welcome address, Dr Deepshikha Bhardwaj, Principal of Government Degree College Chail–Koti, extended a warm welcome to all dignitaries and participants. She underscored the growing relevance of examining the intersection of education, economy, and environment amid rapid globalisation and developmental transitions. She observed that contemporary paradigms must harmonize ecological consciousness with economic planning and educational reform to foster a sustainable, inclusive, and equitable future.

The keynote address was delivered by Prof Meenakshi F Paul, Professor of English and Principal at Himachal Pradesh University Centre for Evening Studies. She eloquently articulated the urgent need for environmental preservation to ensure humanity's continued survival and progress. Drawing on compelling anecdotes and contemporary examples, she positioned sustainable development as an indispensable principle for public policy and institutional practice. Prof Paul specifically referenced the degradation of the Aravali Hills and its far-reaching ecological consequences. She critically examined capitalist interventions in nature and the environmental destruction from unchecked economic exploitation. Emphasising India's cultural ethos of reverence for nature—including the traditional deification of natural elements—she urged society to approach the environment with moral

responsibility and ethical accountability. She advocated strict enforcement of laws protecting natural resources.

The specially invited speaker, Prof Devender Verma from the Department of Commerce, Himachal Pradesh University (Shimla–5), delivered an insightful lecture on educational institutions' role in cultivating environmental stewardship among youth. He stressed prudent, sustainable use of resources to avert rapid depletion. Prof Verma invoked the ancient Gurukul system of pre-colonial India, which fostered harmony between human life and nature. He noted that modern socio-economic systems have shifted humanity toward a utilitarian, often ruthless approach to nature, calling for restored ethical balance in contemporary development frameworks.

The inaugural session concluded with an interactive dialogue, where participants reflected on sustainable policies and academia's role in addressing environmental crises.

Technical Session

The post-lunch technical session featured scholarly research paper presentations.

- Dr Kavita Kumra, Assistant Professor at GDC Arki, emphasised the interplay between environment and economy, illustrating how environmental health underpins economic development.
- Dr Rajinder Singh, Assistant Professor of Commerce at GDC Sanjauli, highlighted homestays' role in Himachal Pradesh's economy, particularly in sustainable tourism and local livelihoods.
- Dr Hemant Sharma, Assistant Professor of Music (I) at GDC Chail–Koti, analysed causes of disasters and management strategies, stressing preparedness and ecological sensitivity.
- Dr Bobija, Assistant Professor of Hindi at GDC Chail–Koti, explored environmental depictions in Jaishankar Prasad's *Kamayani*.
- Dr Suresh Kumar, Assistant Professor of English at GDC Chail–Koti, examined environmental consciousness in Himachal Pradesh's folk songs and folklore, showcasing indigenous ecological wisdom.
- Mr Aniket, Assistant Professor of Commerce at St Bede's College Shimla, and other scholars also presented papers, enriching the discussions.

The session was chaired by Dr Nidhi Dadhwali, Assistant Professor of Zoology at GDC Theog, who commended the presentations' rigour and coherence.

Dr Bhupinder Thakur, Principal, delivered the vote of thanks, followed by Dr Ajay Kumar, Assistant Professor of Commerce and Convenor of IQAC at GDC Chail–Koti, who expressed gratitude to all guests and participants. The seminar concluded with the National Anthem.

हिमाचल

डिग्री कॉलेज चायल कोटी में शिक्षा, अर्थव्यवस्था व पर्यावरण पर संगोष्ठी

चम्बा एक्सप्रेस। शिमला

राजकीय महाविद्यालय चायल - कोटी और ठियोग के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण बेहतर भविष्य के लिए अंतर्संबंध विषय पर डिग्री कॉलेज चायल एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया। इस संगोष्ठी में करीब 80 प्रतिभागियों, जिनमें शिक्षक, शोधार्थी और विद्वान शामिल हुए, ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की मुख्य वक्ता प्रो मीनाक्षी एफ0पॉल ने अपने संबोधन में सतत विकास तथा पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित किया।

विशेष आमंत्रित वक्ता प्रो0 देवेंद्र वर्मा ने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने तथा सतत विकास के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कॉलेज की प्राचार्या डॉ0 दीपशिखा भारद्वाज ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं और यह सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों की सामाजिक जिम्मेदारी पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में डिग्री कॉलेज ठियोग के प्राचार्य डॉ0 भूपिंदर सिंह ठाकुर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को बधाई दी।

डिग्री कॉलेज चायल कोटी में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर संगोष्ठी

डेमोक्रेसी हिमाचल

शिमला 23 दिसंबर । राजकीय महाविद्यालय चायल -कोटी और ठियोग के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण बेहतर भविष्य के लिए अंतर्संबंध विषय पर डिग्री कॉलेज चायल एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया। इस संगोष्ठी में करीब 80 प्रतिभागियों, जिनमें शिक्षक, शोधार्थी और विद्वान शामिल हुए, ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की मुख्य वक्ता प्रो मीनाक्षी एफ0पॉल ने अपने संबोधन में सतत विकास तथा पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित किया। विशेष आमंत्रित वक्ता प्रो0 देवेंद्र वर्मा ने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने तथा सतत विकास के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कॉलेज की प्राचार्या डॉ0 दीपशिखा भारद्वाज ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं और यह सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों की सामाजिक जिम्मेदारी पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में डिग्री कॉलेज ठियोग के प्राचार्य डॉ0 भूपिंदर सिंह ठाकुर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को बधाई दी।

दिव्य हिमाचल 14/22

गम

वेदन

वेदन पहले
के अलावा
वेज के ही
में अब नगर
से लोगों के
नहीं किया

400
नीकरण
। अब
स दिए
स्थानों पर
बसाया

नगर

क पर

एक नजर

शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर सजी संगोष्ठी

शिमला। राजकीय महाविद्यालय चायल-कोटी और ठियोग के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण बेहतर भविष्य के लिए अंतर्संबंध विषय पर डिग्री कॉलेज चायल एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में करीब 80 प्रतिभागियों जिनमें शिक्षक, शोधार्थी और विद्वान शामिल हुए जिन्होंने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की मुख्य वक्ता प्रो. मीनाक्षी एफ पॉल ने अपने संबोधन में सतत विकास तथा पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। विशेष आमंत्रित वक्ता प्रो देवेंद्र वर्मा ने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पर्यावरणीय चेतना जागृत करने तथा सतत विकास के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कालेज की प्राचार्या डा. दीपशिखा भारद्वाज ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं और यह सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों की सामाजिक जिम्मेदारी पर भी प्रकाश डाला।

अमर उजाला

न्यूज डायरी

चायल कोटी कॉलेज में पर्यावरण पर संगोष्ठी

डिग्री कॉलेज चायल कोटी में संगोष्ठी में सम्मानित करते हुए। स्रोत : कॉलेज

जुन्गा (शिमला)। राजकीय महाविद्यालय चायल-कोटी और ठियोग के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण विषय पर डिग्री कॉलेज चायल में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में शिक्षक, शोधार्थी और विद्वान शामिल हुए। मुख्य वक्ता प्रो. मीनाक्षी एफ पॉल ने सतत विकास तथा पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। विशेष आमंत्रित वक्ता प्रो. देवेंद्र वर्मा ने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने और सतत विकास के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं कॉलेज की प्राचार्य डॉ. दीपशिखा भारद्वाज ने शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को एक-दूसरे का पूरक बताया। कार्यक्रम में ठियोग कॉलेज के प्राचार्य डॉ. भूपिंदर सिंह ठाकुर ने भी शिरकत की। संवाद

डिग्री कॉलेज चायल कोटी में शिक्षा-पर्यावरण पर संगोष्ठी

सोलन/प्रताप भारद्वाज : राजकीय महाविद्यालय चायल -कोटी और ठियोग के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण बेहतर भविष्य के लिए अंतर्संबंध विषय पर डिग्री कॉलेज चायल एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया। इस संगोष्ठी में

करीब 80 प्रतिभागियों, जिनमें शिक्षक, शोधार्थी और विद्वान शामिल हुए, ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की मुख्य वक्ता प्रो मीनाक्षी एफ पॉल ने अपने संबोधन में सतत विकास तथा पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित किया।

डिग्री कॉलेज चायल कोटी में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर संगोष्ठी

शिमला। राजकीय महाविद्यालय चायल -कोटी और ठियोग के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण बेहतर भविष्य के लिए अंतर्संबंध विषय पर डिग्री कॉलेज चायल एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया। इस संगोष्ठी में करीब 80 प्रतिभागियों, जिनमें शिक्षक, शोधार्थी और विद्वान शामिल हुए, ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की मुख्य वक्ता प्रो मीनाक्षी एफ०पॉल ने अपने संबोधन में सतत विकास तथा पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संतुलन के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित किया। विशेष आमंत्रित वक्ता प्रो० देवेंद्र वर्मा ने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने तथा सतत विकास के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कॉलेज की प्राचार्या डॉ० दीपशिखा भारद्वाज ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं और यह सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों की सामाजिक जिम्मेदारी पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में डिग्री कॉलेज ठियोग के प्राचार्य डॉ० भूपिंदर सिंह ठाकुर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को बधाई दी।

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
NATIONAL SEMINAR
"EDUCATION, ECONOMY
22nd DECEMBER, 2025
In collaboration with

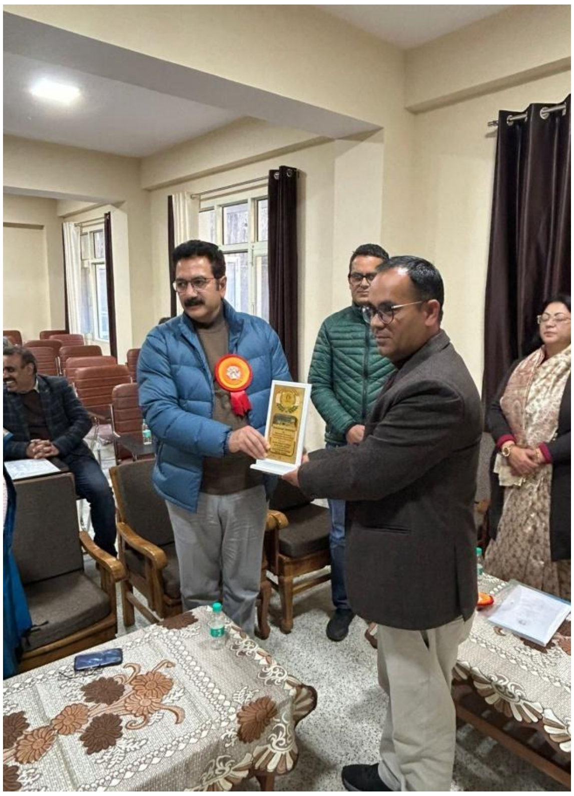

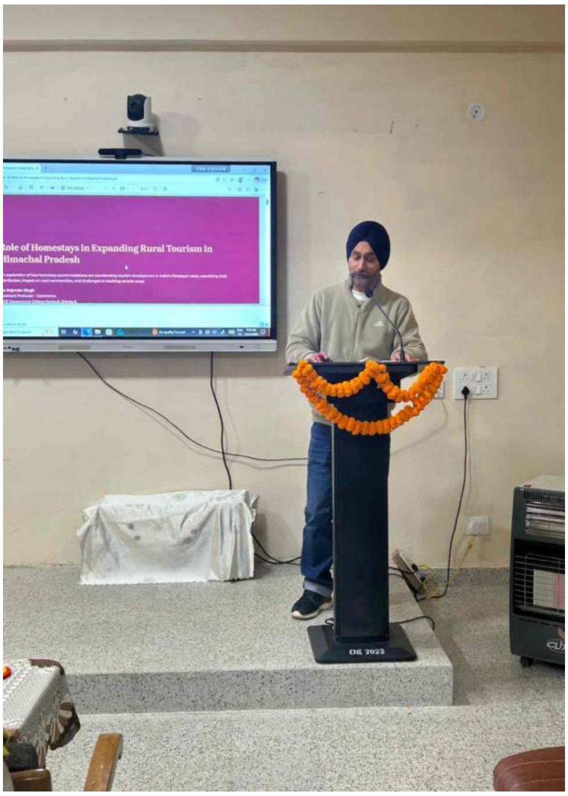
Role of Homestays in Expanding Rural Tourism in
Himachal Pradesh

INTERNAL QUALITY
ASSURANCE CELL (IQAC)

Principal

Govt. Degree College Chail- Koti

District Shimla